विषय : मुझे भी है एक सपना है

" माँ खुश है "

माँ सीधे घर की ओर बढ़ रही थी। पता नहीं क्यों उनके पैर काँप रहे थे और साथ ही साथ गिरने को मज़बूर भी थी। घर के दरवाज़े से होकर कुछ प्रतीक्षा से उनके बलहीन पैर धीरे-धीरे ऊर्जा से भर रही थी, आँखों में से आँसू टपक रहे थे। जल्द ही माँ ने इशा के रूम का दरवाज़ा खोला।

गुजरात के वलसाड़ नगरी में एक सुंदर सी लड़की रहती थी उसका नाम भी बहुत खूबसूरत था बिलकुल उसकी तरह, इशा। इशा अपनी माँ के साथ एक घर में बहुत खुशी से रहती थी। हर दिन सुबह उनके घर के सामने से गुज़रने वाले लोग यह सुनने को मज़बूर थे, "

" इशा --- ओ इशा -- अरे उठना तेरी कोलेज जाने का वक्त हो चुका है।

इस लड़की से तो मैं तंग आ चुकी हूँ

अरे इशा --- है भगवान ये लड़की इतना क्या गहरी नींद में है जो मेरी आवाज़ को जवाब तक न दे रही --

इशा -- ?

इशा का हर दिन का सोने का नाटक चलता रहता था। लेकिन एक दिन माँ ने उसे बहुत बहुत डाटा, वो चिल्लाते जा रही थी की "तेरे आलसीपन ने मुझे तंग कर दिया", लेकिन लेकिन ये चिल्लाना बहुत देर तक नहीं चला क्योंकि माँ को इशा को डाटना पसंद ही नहीं था, यह बात इशा को भी पता था, इसलिए उसने इस चिल्लाने पर ध्यान ही नहीं दिया। अगले दिन चाय बनाते वक्त माँ ने देखा की इशा जल्दी उठकर अखबार पढ़ रही थी। माँ ने चाय लेकर उसके पास जाकर उसके माथे पर हाथ लगाया और गले लगाया। माँ ने पूछा "तुझे अभी नहाना नहीं है क्या?, रुको मैं तेल लेकर आती हूँ"

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 340

माँ बहुत खुश थी और झट से उसके लिए तेल का ~~डि~~ डिब्बा लेकर आ गई। कुरसी पर बैठकर माँ तेल लगा रही थी और इशा अखबार पढ़ रही थी। इशा ने उत्सुकता से ज़ोर से वाचा

"ऐ. ए. एस ~~लव~~ ~~लक्ष्म~~ रेनुका ने बहुत सारे कर्तव्य से राज्य की ~~राजनीति~~ राजनीतिक विकास ~~के~~ में बहुत बड़ा संभावन जन्म दिया"

"अरे अम्मा मुझे भी एक सपना है मुझे भी रेनुक सिंग जैसे बनना है और राज्य के विकास के लिए और अन्याय के ~~लिए~~ खिलाफ लड़ना है"

"मेरी प्यारी बेटी तुझे ऐ. ए. एस बनना है तो बहुत ~~ब~~ सारा पढ़ना होगा, दिन-रात मेहनत करना होगा, तेरा आलसिपन ये बोझ थोड़ी न उठायगा?"

"नहीं माँ मुझे ऐ. ए. एस बनना ही है मैं आलसी नहीं हूँ"

"ठीक है, ठीक है तुम बन सकते हो अब मुझसे लड़ना बंद ~~करो~~ कर और अखबार वाच, ऐ. ए. एस के लिए आधुनिक संभवो की जानकारी आवश्य

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

है जिसमें अखबार तुम्हारी बहुत मदद करेगा"
इशा का दूसरा सवाल उल्लेख -

"दो लड़कियाँ बलात्कार हुई संभत में दो आदमियों को पकड़ा किया गया"
"माँ ये बलात्कार क्या होता है?"
"अरे बाबा, तुम अभी बारह साल की हो न तुम बड़े होते वक्त इसका अर्थ समझ लोगी ___ अरे आठ बज गये जल्दी नहाकर आ __ नौ बजे को स्कूल की गाडी आ जायेगी __ जा रे"

उस घर में दोनों बहुत खुश थे। इशा के पापा कश्मीर में काम करते थे। वो एक फौजी थे। उनके कारनामें अच्छे ~~अ~~ किमा दिल - दिमाग और बहादुरी ने उनको बहुत प्रसिद्ध बनाया है। लेकिन २००८ नवंबर २६ को उनकी मृत्यु हुई। तब वो एक ~~सि~~ 'सीकरेट मिशन' पर थे। इशा तब सिर्फ पाँच साल

की थी। माँ के लिए वो दिन एक काला सपना था। माँ का जिवन लेकिन मेरा दिल इशा के शरा छोटे-छोटे शरारतों ने जीवित किया था। माँ इशा के लिए दिन रात मेहनत करती थी। माँ को बस एक ही सपना था अपने एक ही एक बेटी के लिए जी कर और उसकी सफलता को देखकर मरना। इशा की माँ ने अभी तक पापा की याद नहीं दिलाई है। माँ इशा से बहुत प्यार करती थी। तेरह साल में उसने इशा ने बहुत सारे स्कोलरशिप परीक्षाओं में जीत हासिल कर चु चुकि थी। इशा की हर एक ष कदम सफलता देखकर माँ अपने पुराने भूतकाल को भूल रही थी और अपने बेटी के नये भविष्य को जन्म लेते देखकर वो खुश थी।

माँ ने धीरे-धीरे काम पर जाने का सोचा और अपने घर से तीन मील दूर एक कंपनी में काम करना श शुरु कर देती थी है। माँ का ध्यान धीरे-धीरे अपने भूतकाल की ओर भटक जाता था लेकिन जब भी वो इशा का मुख देखती थी

तब ही वो सब भूल भी जाती थी। इशा को अपना सा एक एक सपना भी था 'की अपनी माँ को हर बार खुश रखने का, कभी - कभी अंधेरे में खो जाने वाला वो मुख, इशा को और बहुत दुख दिलाना था। इशा को अपने पापा का मृत्यु उसकी दादी से पता ही चल गया था लेकिन अपनी माँ के लिए, उनके खुशी के लिए उसने ये दुख प्रकट नहीं किया।

वक्त बीतता गया और इशा बडी होती गई। उसने दसवी में अच्छे मार्क लाकर ग्यारहवी क्लास में कदम रख चुकि थी। तब इशा के जिवन में एक बहुत बड़ा वि विपत्त हुआ माँ एक बुरे और खतरनाक बिमारी में कैद हो चुकि थी। अस्प असपताल में बहुत दिन बिताने से इशा को बहुत कुछ नष्ट हुआ, उसकी पढ़ाई आधि - अधूरी रह गई। लेकिन उसे पता था की माँ जल से जल्द ही ठीक हो जाएगी और वापस उनदोनों के खुशियों के में पैर रख पाएगी। ठीक वैसा ही हुआ, लेकिन मैं माँ पेहले के तरह अच्छे अच्छे से चल और काम न कर पा रही थी। वो ज्यादा से ज्यादा

आराम करने में मजबूर थी। इशा की रोज़ी-रोटी में आए इस तिनके को भी उसने बहादुरी से से सामना किया। घर के सब काम करने में अ उसकी मदद करने पंजाब उसकी दादी और मामा-मामी भी आ चुके थे, लेकिन उनका अस्तित्व भी ज्यादा दिन नहीं चला कुछ दिनों बाद दादी के सिवाई बाकी सभी लोग इशा को कुछ पैसे देकर अपने गाँव लौट गये। इशा अपने दादी अ को और दादी इशा को भी बहुत प्यार करती थी। इशा के लिए घर के कामों में दादी उसकी मदद करती थी। माँ धीरे-धीरे ठीक हो रही थ रही थी।

इशा भी बहुत खुश थ थी। उ उसने धीरे-धीरे परीक्षा के लिए पढ़ाई शुरु कर ली थी। हर दीन अपने माँ के सामने वो पढ़ाई करती थी। माँ भी उसकी मदद करती थी। बिस्तर से धीरे-धीरे बच्चों के इशा के पेहले कदम रखने पर माँ को जो खुशी मिली थी वो खुशी माँ को अपने पैरों के शक्ति के वापस आने पर मेहसूस हो रहा था।

तीन बार इशा ने यू.पी.एस.सी

परीक्षा का सामना किया। माँ ने उसपर ज़रा सा भी शब्द नहीं उठाया। ~~चौ~~ चौथी बार उसने ~~कर~~ ~~दिखाया~~ फिर से लिखने का निर्णय लिया। वो दिल्ली में परीक्षा लिखने जाने के लिए तैयार थी। माँ ने उसे अपने पैसों से एक फोन भी लेकर दिया। इस बार इशा को पक्का पता था की वो ज़रूर ~~ष~~ पा लेगी। वलसाड़ रेयिलवे स्टेशन से उसने ट्रेयिन चढी और माँ को बुलाया। फोन में दोनो ने कई बार बात की।

परिक्षा के समय से एक घण्टे पहले ~~वो~~ उसने माँ को विदा दी और थोडी ~~देर~~ देर पढने के बाद परीक्षा लिखने सेन्टर मे प्रवेश कर चुकि थी। माँ अपने प्रार्थना के बाद ~~ब~~ बहुत उत्सुकता से उसे फोन किया। इशा ने उठाकर कहाँ।

" माँ मैं निकल गई हूँ और स्टेशन के रास्ते पर हूँ ~~परिक्ष~~ परिक्षा मेरे लिए बहुत आसान था, मैं बहुत खुश हूँ, मैं ट्रेयिन में चढ़कर बुलाती हूँ ---- "

थोड़ी देर बाद माँ ने फिर से इशा को बुलाया लेकिन फोन बंद था। माँ ने सोचा नेटवर्क का कंप्लेंट होगा दादीमाँ ने कहा

"अरे तुम परेशान मत हो मेरी प्यारी आती ही होगी"।

थोड़ी देर बाद एक कॉल आया

"मैं दिल्ली पुलिस में से हूँ
माफ़ी चाहता हूँ आपकी बेटी ---"

माँ ने जल्द फोन बंद किया। माँ ने दादीमाँ को कोई भी जवाब न देते हुए तो तुरंत दिल्ली के लिए खाना हो चुकि थी। सब हो चुका था। एक हफ्ता बीत गया अपनी प्यारी बेटी को ढूंढने को कहकर निसफल होकर थलसाड़ स्टेशन में आ उतरी माँ पैदल चल रही थी। अपने रास्ते के तंग रास्तो मे तो अपने टूटते आवाज को बिखरा पा रही थी। घर की ओर --- सब शून्य था। सब लोग माँ से पूछ रही थी क्या हुआ अपने आँखो को पोछकर उन्होंने कहा

"मेरी बेटी --- ऐ.ए.एस बन चुकी है"

जल्द ही बात बदलते हुए फोन में आए रिसल्ट को देखते हुए वो बोलती है---

धीरे-धीरे माँ घर की ओर बढ़ती है। घर के अंदर तेज़ी से जाती है.. हाल में दादीमाँ लेटे-लेटे ज़मीन में मरे हुए की तरह लेट रही थी। हाथ में एक अखबार का टुकड़ा भी था---

माँ ने वो उठाकर बाचा---

"ए.ई.एस मकसत पर पहुँची इशा की दरदनात्मक मृत्यु"

वो टुकड़ा माँ के हाथ से नीचे गिर गया और माँ तेजी से इशा के रूम के दरवाज़े को खोलती है--

"इशा देख मैंने अन्याय को मिटा दिया मैंने उस आदमी को दिल्ली जेयिल में हमेशा से कैद कर लिया"

घर के बाहर एक भीड़ मौजूद थी---

वो सब इशा के न्याय के लिए आवाज़ उठा रहे थे। पूरी दुनिया में इशा की वार्ता फैल चुकी थी

लेकिन माँ के लिए ---

वो अभी -- भी जिंदा थी ---

"माँ मुझे भी एक सपना है ----"

मेरा सपना ---

"माँ ये बलात्कार क्या होता है ---"

"चुप करो अम्मा -- मैं आलसी नहीं हूँ

नहीं , --- नहीं -- नहीं --

अगली सुबह --- फिर से अपने काले सपने से उठी वो

माँ

"इशा --- इशा -- अरे इस लड़की ने तो हद ही

कर दी -- इस लड़ी से तो मैं तंग आ चुकी

हूँ

"इशा --- इशा अरे उठना --- ।

अपनी बेटी की सफलता । उस माँ का अधूरा सपना अब

सच हो चुका है । वो खुश -- है -- खुश है -- खुश है ।